हिन्दी - पुष्प

(साउथ एशिया टाइम्स का हिन्दी परिशिष्ट)

वर्ष-६ अङ्क-४ नवम्बर, २००९

सम्पादकीय

मेल्बर्न-कप

दीपावली बीती नहीं कि मेल्बर्न में घुड़दौड़ों का दौर आरम्भ हो गया। वैसे यहाँ घुड़दौड़ प्रतियोगिताएँ तो कई होती हैं परन्तु नवम्बर के प्रथम मंगलवार को दोपहर ३ बजे होने वाली घुड़दौड़ प्रतियोगिता का विशेष महत्त्व है। इसे 'मेल्बर्न कप' के नाम से जाना जाता है। यह कप सोने का बना होता है और इसकी कीमत लगभग १२५,००० डालर बतायी जाती है। इस दौड़ में भाग लेने के लिये देश-विदेश से घोड़े आते हैं। इस दिन छुट्टी होती है - शायद यही एक ऐसा देश है, जहाँ एक घुड़दौड़ देखने के लिये सार्वजनिक छुट्टी होती है। जो लोग घुड़दौड़ प्रतियोगिता के बारे में कुछ भी नहीं जानते हैं, वे भी अपनी पसंद के घोड़े पर इस दिन दाँव लगाते हैं। इस वर्ष 'मेल्बर्न-कप' जीतने वाले घोड़े 'शॉकिंग' के मालिक को ३६ लाख डालर का पुरस्कार मिला। इसके अलावा यह दिन फ़ैशन की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है, यद्यपि कि फ़ैशन-प्रदर्शन मेल्बर्न-कप के दो-तीन बाद तक चलते रहते हैं। मेल्बर्न-कप के दिन लोग तरह-तरह की 'हैट' पहनते हैं, जो देखने योग्य होती हैं। चारों ओर मस्ती और उल्लास का वातावरण रहता है। प्रसिद्ध खानसामे अपनी-अपनी पाक-कला का प्रदर्शन करते हैं। इस वर्ष, 'एमिरेट एयरलाइन्स' ने 'बॉलीवुड' की विषय-वस्तु (थीम) पर अपना तम्बू सजाया था। महिलाओं के फ़ैशन-प्रदर्शन का दिन गुरुवार होता है, जिसे 'ओक-दिवस' के नाम से जाना जाता है। हिन्दी-पुष्प के इस अङ्क में 'मेल्बर्न-कप' के संदर्भ में घुड़दौड़ पर कुछ कविताएँ हैं। इसके अतिरिक्त, बाल-दिवस के अवसर पर बच्चों की कुछ कविताएँ हैं और चाचा नेहरू के बाल-प्रेम पर एक संस्मरण है तथा 'अपना-अपना विश्वास' नामक एक लघु-कथा है। साथ में 'अब हँसने की बारी है' तथा सूचनाएँ भी हैं। आशा है आपको यह अङ्क पसंद आएगा। आपके विचारों, सुझावों तथा रचनाओं का हम स्वागत करेंगे।

-दिनेश श्रीवास्तव

त्रुटि-संशोधन - पिछले अंक में, 'सम्पादक के नाम पत्र' में श्री अब्बास रज़ा अलवी का जन्म स्थान 'फ़तेहगढ़' होना चाहिये था न कि 'फ़रीदाबाद'। इस त्रुटि के लिये हमें खेद है।

लेखकों से निवेदन

१. कृपया अपनी रचनाएँ (कहानियाँ, कविताएँ, लेख, चुटकुले, मनोरंजक अनुभव आदि) निम्नलिखित पते पर भेजे -

डा० दिनेश श्रीवास्तव, १४१ हायट स्ट्रीट. रिचमंड, विक्टोरिया ३१२१

(Dr. Dinesh Srivastava, 141 Highett Street, Richmond, Victoria 3121)

२. हस्तलिखित रचनाएँ स्वीकार की जाएँगी परन्तु इलेक्ट्रानिक रूप से हिन्दी-संस्कृत फ़ांट मे रचनाएँ भेजे तो उनका प्रकाशन हमारे लिए अधिक सुविधाजनक होगा।

ई-मेल से रचनाएँ भेजने का पता है-

dsrivastava@optusnet.com.au

३. अपनी रचनाएँ भेजते समय अपनी रचना की एक प्रतिलिपि अपने पास अवश्य रखे।

घुड़दौड़ों का मौसम

- राजेन्द्र चोपड़ा, मेल्बर्न

ऑस्ट्रेलिया का हर मौसम
है खुशियों भरा त्योहार का मौसम
एक अजीब उमंग-तरंग भर जाती है
जब आता है बसंत-बहार का मौसम
तब होता है
घुड़दौड़ों का मौसम

ऊनी कपड़ों को तज
हलके-पहरावे का मौसम
बाहर खुले में रहने की चाहत को
मिलती है राहत
हर जज़्बे को इज़हार करने का
होता है मौसम
कोशिश थी यह अति पुरानी,
हर तबके को मिलवाने की
बना दिया जिस को
घुड़दौड़ों का मौसम

ऑस्ट्रेलिया में हर प्रांत और
हर शहर के वासी
या देश-विदेश के
हर बाज़ी लगाने वाले के लिए
बन चुका है घोड़ों संग जूए के
प्यार का मौसम
डेढ़ शतक से सभ्यता की
पहचान का मौसम
बन चुका है यह
घुड़दौड़ों का मौसम

गति समय की तेज़ है
सदा से अधिक ज़माने की
इंसान ढूँढ़ता है कोई भी राह
खुशियाँ मनाने की
मेल्बर्न कप से पहले
काफ़ी होता है जोशो-जश्न
'मूनी-वैली' की 'काक्सप्लेट'* या
'कॉफील्ड कप'* का फ़ैशन
सब मिल मनाते हैं
घुड़दौड़ों का मौसम

क्या बताऐं, क्या नहीं होता है
घुड़दौड़ों के दिन
सूट-बूट और टाई में गँवार भी
दिखते हैं 'जेन्टिलमैन'
फैशन-दार-ड्रैस, सुंदर-सैंडल
और भाँति-भाँति की हैटों में
बुढ़िया बन, युवती घोड़ी सी
दौड़ी बूढ़े संग बे-लगाम
कुछ ऐसा भी होता है
घुड़दौड़ों का मौसम

'डारबी'* हो या 'मेल्बर्न-कप'
सब में होता है जोश निराला
हारें या जीतें पर क्या जिया
अगर यारों संग नहीं पिया
कोई यहाँ गिरा, कोई वहाँ पड़ा,
हाथों में 'बबली शैम्पेन'
कई झूमते ले हिचकियाँ
घर जाने की नहीं कोई टेन्शन बिगड़े
सूरत बहुतों की, यारों यह है
घुड़दौड़ों का मौसम

मालिक, ट्रेनर, जॉकी
और सब बिज़नेस वाले बाकी
सब ने मिल कर खूब कमाया,
हैं वे बहुत लकी
दिल दरिया, पैसा पानी,
जी भर कर मनोरंजन कर लो
इंसानों में भी 'फ़ारलैप'** सा
बड़ा जिगर है ऐसा जानो
फिर मिलेंगे अगले साल
सफ़र सुहाना ऐसा मानो
राजन जब आयेगा
घुड़दौड़ों का मौसम

* घुड़दौड़ों के नाम
** १९३० में मेल्बर्न-कप
जीतने वाले घोड़े का नाम
जिसका पार्थिव शरीर आज भी मेल्बर्न
संग्रहालय में सुरक्षित है।

काव्य-कुंज

घोड़े

-हरिहर झा, मेल्बर्न

घोड़े महत्वाकांक्षाओं के
ऊँची-ऊँची लालसाओं के
भागते हुए
सरपट मैदान की बात ही क्या
चढ़ भी जाते हैं सीढ़ियों पर
भले ही पैर हो लहू-लुहान
कभी तो दुनियावी बोझे से लदा तांगा
कंधों पर उठाये
आकाश से उड़ते हुए
भावना के परिन्दों को नीचा दिखाते हुए....

ये घोड़े दे गये मुझे
अथाह शक्ति, धन-दौलत
ईर्ष्या मित्रों की
गालियाँ दुश्मनों की
अजनबियों की व्यंग्यमय मुस्कान
सब कुछ पा लिया
अपने ही बलबूते पर यानी
बलपूर्वक इस घोड़े के बूते पर
सब कुछ पा लिया
अपने 'स्वयं' की पूर्णाहुति दे कर
मैंने अश्व नहीं
नरमेध यज्ञ में
घोड़े को किया
यशस्वी, विजयी, कीर्तिमान।

बाल-दिवस पर बच्चों की कुछ रचनाएँ

फूल

- प्रियंका मीत (कक्षा-५),
(विक्टोरियन स्कूल आफ़ लैंग्वेजेज़
डैंडेनांग केन्द्र, मेल्बर्न)

बागों में हैं फूल खिलते
सबको कितने सुन्दर लगते।
जीवन में ये खुशियाँ लाते
हमको हैं मुस्काना सिखाते।
लाल, गुलाबी, पीले रंग के
आँखों को बहुत प्यारे लगते।
बागों में हैं फूल खिलते

रिमझिम-रिमझिम

- इला प्रवीन, शारजाह

रिमझिम-रिमझिम बारिश आयी
साथ में ठंडा पानी लायी
काले-काले बादल छाये
गरजने की भी आवाज़ आयी

पेड़ भीगे, पौधे भीगे
पशु-पक्षियों ने प्यास बुझायी
सारी धरती भीग गयी
मिट्टी की सोंधी खुशबू आयी

शालू ने गरम पकौड़े बनाये
घर में सबको चाय पिलायी
सबने बारिश के मज़े लूटे
गरमी से अपनी जान छुड़ायी

कुछ बच्चे पानी में भीगे
कुछ ने कागज़ की नाव बनायी
कुछ गली-गली चिल्लाये
देखो रिमझिम बारिश आयी

चाचा नेहरु का बाल-प्रेम

- राजश्री कासलीवाल, भारतवर्ष

स्वतंत्र-भारत के प्रथम प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू को बच्चे बहुत प्रिय थे। उनका जन्म-दिवस, १४ नवम्बर, भारत में बाल-दिवस के रुप में मनाया जाता है। चाचा नेहरू का निवास स्थान दिल्ली में तीनमूर्ति नामक भवन था। एक दिन तीन मूर्ति भवन के बग़ीचे में लगे पेड़-पौधों के बीच से गुज़रते हुए घुमावदार रास्ते पर नेहरू जी टहल रहे थे। उनका ध्यान पौधों पर था। वे पौधों पर छाई बहार देखकर खुशी से निहाल हो रहे थे तभी उन्हें एक छोटे से बच्चे के रोने की आवाज़ सुनाई दी। नेहरू जी ने आस-पास देखा तो उन्हें पेड़ों के बीच एक दो माह का बच्चा दिखाई दिया जो दहाड़ें मार कर रो रहा था।

नेहरू जी ने मन ही मन सोचा - इसकी माँ कहाँ होगी? उन्होंने इधर-उधर देखा। वह कहीं भी नज़र नहीं आ रही थी।

चाचा ने सोचा शायद वह बग़ीचे में माली के साथ कहीं काम कर रही होगी। नेहरू जी यह सोच ही रहे थे कि बच्चे ने रोना तेज़ कर दिया। इस पर उन्होंने उस बच्चे की माँ की भूमिका बनाने का मन बना लिया।

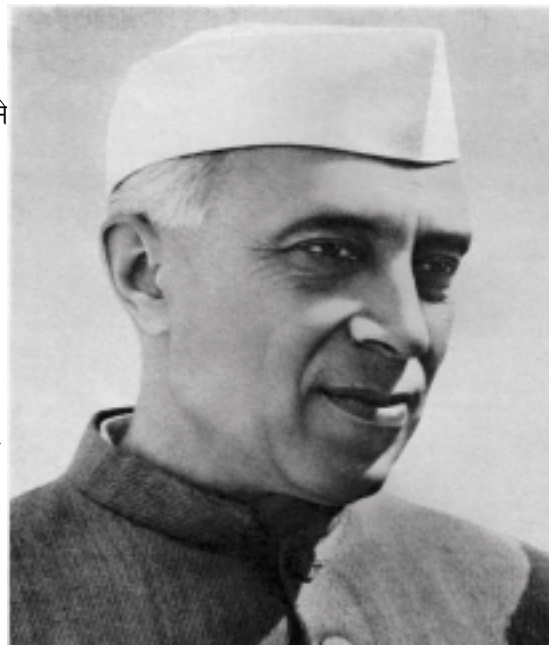

नेहरू जी ने बच्चे को उठा कर, अपनी बाँहों में ले कर थपकियाँ दीं, झुलाया तो बच्चा चुप हो गया और मुस्कुराने लगा। बच्चे को मुस्कुराते देख कर चाचा खुश हो गये और बच्चे के साथ खेलने लगे। जब बच्चे की माँ वहाँ दौड़ते हुए पहुँची तो उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। उसका बच्चा नेहरू जी की गोद में मंद-मंद मुस्कुरा रहा था।

ऐसे ही एक बार जब पंडित नेहरू तमिलनाडु के दौरे पर गये तब जिस सड़क से वे गुज़र रहे थे, वहाँ लोग साइकिलों और दीवारों पर चढ़ कर उन्हें निहार रहे थे। उनकी एक झलक पाने के लिये हर आदमी इतना उत्सुक था कि जिसे जहाँ समझ आया वहाँ खड़े हो कर पंडित नेहरू को निहारने लगा।

इस भीड़ भरे इलाक़े में, नेहरू जी ने देखा कि दूर खड़ा एक गुब्बारे वाला पंजों के बल खड़ा डगमगा रहा था। ऐसा लग रहा था कि उसके हाथों में तरह-तरह के रंग-बिरंगे गुब्बारे मानो पंडित जी को देखने के लिये डोल रहे हों। जैसे वे कह रहे हों कि तमिलनाडु में हम आपका स्वागत करते हैं। जब नेहरू जी की गाड़ी गुब्बारे वाले तक पहुँची तो वे गाड़ी से उतर कर गुब्बारे ख़रीदने के लिये आगे बढ़े तो गुब्बारे वाला हक्का-बक्का सा रह गया।

नेहरू जी ने अपने तमिल जानने वाले सचिव से कह कर सारे गुब्बारे ख़रीदवाये और वहाँ उपस्थित सारे बच्चों को वे गुब्बारे बँटवा दिये। चाचा नेहरू को बच्चों के प्रति बहुत लगाव था। नेहरू जी के मन में बच्चों के प्रति विशेष प्रेम और सहानुभूति देख कर लोग उन्हें चाचा नेहरू के नाम से संबोधित करने लगे और जैसे-जैसे गुब्बारे बच्चों के हाथों तक पहुँचे, बच्चों ने चाचा नेहरू-चाचा नेहरू की तेज़ आवाज़ से वहाँ का वातावरण उल्लसित कर दिया। तभी से वे चाचा नेहरू के नाम से प्रसिद्ध हो गये।

अपना-अपना विश्वास

लघु-कथा

-इला प्रसाद, अमेरिका

एयर कंडिशंड घरों की सबसे बड़ी समस्या ताज़ी हवा का आवागमन अवरुद्ध होना है। अमेरिका में हम सब इस समस्या को झेलते हैं। खाना बनाओ तो खाने की गंध दिन भर घर में बसी रहती है। मैंने एक नियम बना लिया है। खाने बनाते समय घर का दरवाज़ा खुला छोड़ देती हूँ। स्टॉर्म डोर बन्द रहता है। यानी हवा का आवागमन तो बना रहेगा, किन्तु दरवाज़े से कोई अन्दर नहीं आ सकेगा। यह व्यवस्था थोड़े ही समय में राकेश को भी पसन्द आ गई। छुट्टी का दिन था और खाने बनाने की दिनचर्या! लेकिन आज थोड़ा भिन्न। मैंने तनुजा को खाने पर बुलाया था।

बहुत कुछ बन चुका था। दोपहर बीत रही थी। तनुजा कभी भी आ सकती थी। आलू भुन चुके थे। मटर-पनीर और दाल बनाने के बाद मैंने बासमती चावल चढ़ा दिए थे और रसोई में खाने की टेबल पर सुस्ताने आ बैठी थी। सामने लिविंग रूम की खिड़की से सहज ही बाहर नज़र चली गई। सड़क से दूसरी ओर दो काली स्त्रियाँ, वही चर्च वाले! दो मिनट बीते। वे हमारे दरवाज़े पर। स्टॉर्म डोर पर ठक-ठक।

"तुम रहने दो। मैं देखता हूँ।" राकेश ने पुकार कर कहा।

"कह देना, हम हिन्दू हैं। भगाओ जल्दी। तनुजा और बच्चे आते ही होंगे।"

वे कुछ देर बाद वापस लौटे। "क्या पका रही हो, छवि?"

"ये चावल चढ़े हैं।"

"वे कह रही थीं, तुम्हारे घर से बहुत अच्छी खुशबू आ रही है।"

"इन्हीं चावलों की होगी।"

"उन्हें खिलाओगी? थोड़ा खिला दो उन्हें भी। घटेगा तो नहीं न?"

"नहीं घटेगा क्या! वे हमारा भारतीय भोजन पसन्द करेंगी क्या?"

"वे खाने को उत्सुक लगीं।"

"बुला लो।"

राकेश तत्परता से दरवाजा खोल कर बाहर निकल गए। मैंने खिड़की से देखा। वे सामने वाले घर के ड्राइव वे तक पहुँची थीं, जब राकेश उनसे जा मिले। चावल पक चुके थे। मैंने 'रेंज' का स्विच आफ़ किया। रसोई समेटी। कैसेरोल में पूरियाँ गिनीं। वे तब तक उन दोनों के साथ रसोई में पहुँच गए।

"हाई।" वे दोनों हँसीं। "यह मेरी बेटी है।"

"हाई।" मैंने मुस्करा कर उनका स्वागत किया।

राकेश ने उन्हें बिठाया। प्लेट लगाई। मैंने भोजन परोसा। उन्होंने भूखों की तरह जल्दी-जल्दी खाया। तारीफ़ की और उठ कर खड़ी हुईं "बहुत अच्छा भोजन। बहुत-बहुत धन्यवाद।" उन्होंने मुझे गले लगाया।

"आपका स्वागत है। मैंने कहा और फिर पूछा "आप कुछ पूरियाँ ले जाना चाहेंगी?" मैंने कुछ पूरियाँ नैपकिन में आलू के साथ लपेट कर बढ़ाईं।

"नहीं। हमारे साथ और भी लोग हैं। हम सुबह से धर्म-प्रचार के लिए निकले हुए हैं। यदि उन्होंने देखा तो हमारी शिकायत होगी। हम यहाँ खाने के लिए ठहर गए, यह हमारे विरुद्ध जायेगा।"

"आप उन्हें भी खिला दीजियेगा।" मैंने कहा।

थोड़ी ना-नुकुर के बाद उन्होंने उसे अपने झोले में डाल लिया और तेज़ कदमों से बॉय-बॉय करती घर से बाहर निकल गईं।

"तुम बहुत अच्छा खाना बनाती हो।" राकेश की आँखों में प्रशंसा थी।

"भूखे को भोजन का स्वाद पता होता है। वे शायद बहुत भूखी थीं।"

"क्या कहेंगी, वे अपने बास को? यदि वह डाँटेगा तो?"

"नहीं डाँटेगा। वह भी भूखा होगा। वह खायेगा और फिर उन्हें समझायेगा" जीसस फीड्स (ईसा भोजन देता है!)"

महत्वपूर्ण तिथियाँ

शहीद-स्मारक दिवस ११ नवम्बर), पंडित जवाहर लाल नेहरु का जन्म-दिवस तथा भारतीय बाल-दिवस (१४ नवम्बर), बक़रीद (२७ नवम्बर), बुद्ध धर्म अनुयायियों का बोधि-दिवस (९ दिसम्बर),
यहूदियों का चनुक्का / हनुक्का त्योहार (१२-१९ दिसम्बर), इस्लाम धर्म के अनुयायियों के नव-वर्ष का आरम्भ/ अल हिजिरा (१८ दिसम्बर), बड़ा-दिन / क्रिसमस (२५ दिसम्बर)।

सूचनाएँ

१. **महफ़िल-नाइट-** (शुक्रवार, २० नवम्बर)। विशेष आकर्षण - पाकिस्तानी गायक सुलेमान
स्थान - कोबर्ग में लुइसा स्ट्रीट और विक्टोरिया स्ट्रीट के नुक्कड़ पर स्थित कोबर्ग पुस्तकालय हॉल।
समय- रात्रि के ८ बजे से १० बजे तक। सभी संगीत प्रेमी आमंत्रित हैं। प्रवेश नि:शुल्क है। अधिक जानकारी के लिये, डाक्टर शरतचन्द्रन को ९३६६-५४४ पर फ़ोन कीजिए।

२. क्रिकेट खिलाड़ियों के लिये सुनहरा अवसर (नवम्बर, २००९ से जनवरी २०१० तक)
जाटा (JATA) वर्ग द्वारा आयोजित २०-२० क्रिकेट प्रतिद्वंदिता में अपनी प्रतिभा दिखाइये और २० हज़ार डालर तक के पुरस्कार जीतने का अवसर प्राप्त कीजिये। इस प्रतियोगिता को 'क्रिकेट विक्टोरिया' का पूरा समर्थन प्राप्त है। अधिक जानकारी के लिये नव (फ़ोन न०- ०३ ९६२९ ३९०५ अथवा १३०० ०० ५२८२ से सम्पर्क कीजिये या फिर निम्नलिखित पते पर ई-मेल भेजिये -
cricket@jata .com.au
वेबसाइट - www.jata sports.com.au

३. इंटरनेशनल सोसायटी फ़ार कृष्णा कांशसनेस प्रस्तुत कर रही है-रंगारंग कार्यक्रम - '**ली कार्नवाल स्पिरिचुअल**'। कार्यक्रम में कीर्तन-भजन, संगीत व नृत्य, योग तथा युद्ध-कला का अदभुत मिश्रण है।

तिथि तथा स्थान
शुक्रवार २७ नवम्बर: स्प्रिंगवेल टाउन हॉल।
रविवार, २९ नवम्बर तथा ६ दिसम्बर: सेन्ट किल्डा टाउन हॉल।
शुक्रवार, ४ दिसम्बर तथा शनिवार, ५ दिसम्बर: फ़िट्ज़रॉय टाउन हॉल।
बुधवार, ९ दिसम्बर: विन्डम लेज़र एण्ड ईवेन्ट्स सेन्टर, हॉपर्स क्रासिंग।
आरम्भ समय: ७.३० बजे शाम।
प्रवेश नि:शुल्क है। शाकाहारी भोजन ६ बजे शाम से उपलब्ध होगा।

अधिक जानकारी के लिये, निम्नलिखित वेबसाइट देखिये -
www.spiritual carnival.com.au

अब हँसने की बारी है

१. भूकम्प और मकान

रमा (शीला से) - अरे देखो, भूकम्प आ गया है। पूरा घर हिल रहा है।
शीला (रमा से) - आख़िर घर गिरेगा तो मकान मालिक का। तुम क्यों चिन्ता करती हो?

२. महिला की सूजी हुई आँख

एक महिला की आँख सूजी हुई थी।
पड़ोसन ने पूछा - क्या हुआ?
महिला ने उत्तर दिया - पति ने मारा।
पड़ोसन ने पूछा - लेकिन, मेरे विचार से तो तुम्हारे पति तो इन्दौर गये हुए थे।
महिला - यही तो मैं भी समझती थी।

३. गधा और शराबी

गधे के सामने एक पानी की और एक शराब की बाल्टी रखी थी। गधा पानी पी गया।
पुलिस ने शराबी से पूछा - तूने इससे क्या सीखा?
शराबी ने जवाब दिया - जो दारू नहीं पीता, वह गधा है।